The Sameeksha (समीक्षा) Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 3, Issue 1 - 2019

बिहार में वैष्णव भक्ति आंदोलन: उद्भव एवं विकास

डॉ. कुमार गौरव मिश्रा*

शोध सार (Abstract)

बिहार, भारत में अपनी समृद्ध सामाजिक, सांस्कृतिक इतिहास के लिए प्रचलित है। मध्यकाल में बिहार की चिंतनधारा पर वैष्णव धर्म का पूरा प्रभाव पड़ा। चंदेश्वर द्वारा संकलित कृत्यरत्नाकर से यह स्पष्ट होता है कि मिथिला में 13वीं तथा 14वीं सदियों में लोगों के उपास्य देवता थे- विष्णु, हरि तथा शिव। बिहार में वैष्णव धर्म के विकास के दृष्टिकोण से बिहार का मिथिला प्रदेश प्रमुख है। यह वही क्षेत्र है जहां विद्यापति ने गोरक्षविजय, कीर्तिलता, कीर्तिपताका, उमापति ने पारिजातहरण की रचना की। मिथिला प्रदेश में वैष्णव प्रभाव के सामाजिक एवं राजनीतिक कारण है।

सूत्रशब्द: बिहार, संस्कृति, साहित्य, समाज, पूर्वी भारत, विष्णु, कला, इतिहास।

प्रस्तावना

बिहार प्राचीन काल से ही कला, संस्कृति, अध्यात्म, दर्शन, विद्या, शौर्य और अन्य सभी मानवोचित गुणों का केंद्र रहा है। प्राचीन काल से आज तक देश के इतिहास के हर मोड, हर अध्याय पर इसका प्रमुख स्थान रहा है। राजतंत्र से लेकर दर्शन और अध्यात्म तक में बिहार का जो योगदान भारत की संस्कृति, कला और अन्य क्षेत्रों के विकास में रहा है उसका भारतीय इतिहास में ऊंचा स्थान है।

"बिहार का इतिहास क्रमबद्ध विकास का इतिहास रहा है। प्राचीन परम्पराओं से सुरक्षित कथाओं के आधार पर यह ज्ञात होता है कि मनु के पुत्र नबनेदिष्ठ ने बिहार में आर्य राजवंश की स्थापन की थी। उस वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक विशाल था और उसने ही वैशाली की स्थापना की थी। उस वंश का पुरहित अंगिरा गोत्र का था। उसी प्रकार माथव विदेघ ने मिथिला में आर्य राज्यवंश का विस्तार किया। राजा अंग के नेतृत्व में अंग राज्य की स्थापना हुई। मगध बहुत दिनों तक आर्यों के आधिपत्य से मुक्त रहा। परंतु यहाँ यह स्मरण रखना होगा कि मगध प्राचीन काल में व्रात्य सभ्यता का प्रधान केंद्र था।"[1]

प्राचीन भारत में सभ्यता के चार प्रधान केंद्र थे, मिथिला, वैशाली, अंग और मगध।

बिहार को गंगा की धारा दो भौगोलिक क्षेत्रों में अलग करती है- उत्तर एवं दक्षिण बिहार।। वैशाली गणराज्य, विदेहराज्य, मल्लराष्ट्र और लिच्छवी गणराज्य उत्तर बिहार में वहीं दक्षिण बिहार में कुरु, अंग और मगध का प्रभुत्व था। बिहार के नाम का उल्लेख प्राचीन काल में कहीं भी दिखाई नही पड़ता।

*सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय, ब्राम्बे, रांची।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-401X**

भौगोलिक रूप से ऊपर के क्षेत्रों को मिलाकर वर्तमान बिहार प्रांत का निर्माण हुआ। बौद्ध विहारों की अधिकता होने के कारण मुस्लिम आक्रमणकारियों ने इन क्षेत्रों का नाम 'विहार' रखा, जो आगे चलकर बिहार नाम से प्रचलित हो गया।

दो हजार वर्षों तक प्राचीन मगध का इतिहास संपूर्ण भारत का इतिहास रहा। संस्कृति और प्राचीन भारतीय इतिहास की अनमोल धरोहर आज भी बिहार अपने में समाहित किये हुये है। बिम्बिसार ने पूरे बिहार को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास किया तो उसे मजबूती अजातशत्रु ने प्रदान की। महापद्मनन्द के काल में मगध का लोहा सभी मानते थे तथा इसकी राजधानी पाटलीपुत्र भारत का प्रमुख नगर माना जाता था, इसी काल में मगध के राजा और प्रजा का अनुकरण करने में लोग अपने को गारैवान्वित महसूस करते थे। वीरता एवं पराक्रम में मगध का दबदबा था तो अध्यात्म ज्ञान में मिथिला का अहम स्थान था।

बिहार का इतिहास भारत में सबसे विविध में से एक है। प्राचीन बिहार, जो कि मगध के रूप में जाना जाता था, 2000 वर्षों तक भारत में शिक्षा, संस्कृति, शक्ति और सत्ता का केंद्र था। भारत के पहले साम्राज्य, मौर्य साम्राज्य के साथ ही दुनिया की सबसे बड़ी शांतिवादी धर्म बौद्ध धर्म भी बिहार से पैदा हुई। विशेषकर मौर्य और गुप्त राजवंशों के तहत मगध साम्राज्य, दक्षिण एशिया के एकीकृत बड़े हिस्से के नीचे एक केंद्रीय शासन थी जो कि पहले पाटलिपुत्र के रूप में जाना जाता था तथा इसकी राजधानी पटना थी, उस समय इतिहास की प्राचीन और शास्त्रीय अवधि के दौरान भारतीय सभ्यता का एक महत्वपूर्ण राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक केंद्र था बिहार। धार्मिक महाकाव्यों के बाहर लिखा प्राचीन भारतीय पाठ में से कई प्राचीन बिहार में लिखा गया था।

वैष्णव भक्ति: संक्षिप्त परिचय

भक्तिकाल की सगुण धारा के अंतर्गत एक ऐसी शाखा थी जिसने सम्पूर्ण भारत की विचारधाराओं को प्रभावित किया। विष्णु आलोचित पुरानो में प्रमुख देवता के रूप में है। वायु पुराण और ब्रह्मांड पुराणों में उन्हे विश्वेस,प्रभु तथा सभी लोगों के करता की उपाधि दी गई है।

"विश्वेशो लोककृदेवः...."[2]

"प्रभुविष्णु दिवाकरः...."[3]

भारतीय तत्वेताओं ने भक्ति के महात्म को समझा। विविध देवोपासनाओं के फलस्वरूप भक्ति संप्रदायों का जन्म हुआ। समन्वयवादी मनीषियों ने सबका सम्मान किया, परंतु वैष्णव भक्ति में कुछ ऐसे लोकपयोगी तत्व है, जिनके कारण इसका सर्वाधिक प्रसार हुआ। उन साधकों ने वैष्णव भक्ति में साधन -त्रय का समन्वय किया। जिससे भक्ति पाठ और भी प्रशस्त हुआ। अब भागवत भक्ति ही परम पुरुषार्थ समझी जाने लगी। भक्ति के परिवर्ती विकास पर प्रो॰ विल्सन ने इसे विभिन्न संप्रदायों के गुरुओं द्वारा अपनी प्रतिष्ठा के परिणामस्वरूप दृष्टि एवं प्रचारित बताया है।[4]

ऋग्वेद में अनेक अर्थों को अपने में अनुस्यूत करने के बावजूद 'विष्णु' शब्द का प्रयोग एक महान शक्ति के रूप में हुआ है। यस्क ने रश्मियों के व्याप्त होने के कारण सूर्य को विष्णु कहा है[5] जिस विष्णु के प्रताप से वृष्टि होती है और साथ हि गायों को दुग्ध होता है उसका कालांतर में गोपवेषधारियों कृष्णारव्य विष्णु होना कल्पना गामी माना जाता है , विष्णु ही यजमान तथा देवगणों के लिए ब्रज प्राप्त कराने वाला होने से ब्रजनंदन गोपीजनवल्लभ हो सकता है।[6] 'विष्णु को कहीं इन्द्र, इन्द्र का सखा'[7] कहीं अग्नि बताया गया है।

इस तरह विविध रूपों एवं नामों में उपासना का आधार होने पर भी वैदिक ऋषियों को एक परम सत्ता की आराधना अभीष्ट थी जो परिवर्ती वैष्णव भक्ति के रूप में दिखाई पड़ती है। वैष्णव धर्म में 'अनुग्रह या प्रसाद' की बड़ी महिमा गाई गाई है। श्रीमदभागवत महापुराण के 'पोषनं तदनुग्रह' के

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

आधार पर ही वल्लभचार्य की पुष्टि मार्गीय भक्ति आधारित है। इनके अनुसार भक्ति की प्राप्ति केवल भागवत कृपा से होती है।[8]

वैष्णव धर्म या वैष्णव संप्रदाय का प्राचीन नाम भागवत धर्म या पंचरात्र मत है। इस संप्रदाय के प्रधान उपास्य देव वासुदेव है, जिन्हे ज्ञान, शक्ति बल, वीर्य, एश्वर्य और तेज इन छः गुणों के कारण भगवन या भगत कहा गया है।

"ज्ञान शक्ति बलैश्वर्य वीर्य तेजां स्त्रिशेषतः।

भगवच्छ्वद वाच्यानि विना हर्येगुर्णादिभीः"॥[9]

महाभारत के अनुसार चारों वेदों और संखई योग के समावेश के कारण इसे 'पांचरात्र' कहते है। वैष्णव भक्ति के प्रचार में इसका प्रमुख स्थान है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने विष्णु और वासुदेव की एकता तथा वासुदेव भक्ति का प्रारम्भ महाभारतकाल में ही सिद्ध किया है।[10] महाभारत के शांतिपर्व में विष्णु को वासुदेव कहा गया है।

उपनिषदों, पुराणों (विष्णु पुराण, वामन, वराह, नारद, पदम, मत्स्य, ब्रह्मवैवर्त) के पश्चात श्रीमदभागवत में विष्णु का उल्लेख हुआ है इसमें विष्णु के अन्य स्वरूपों एवं अवतारों का तो वर्णन किया ही गया है, भगवन के श्रीकृष्ण अवतार की विविध लीलाओं का वर्णन पर्याप्त रूप में किया गया है। श्रीमदभागवत के द्वारा ही सम्पूर्ण भारत वर्ष में वैष्णव धर्म का प्रचार हुआ। परवर्ती सभी वैष्णव संप्रदायों का आधार ग्रंथ यही रहा है। विष्णु के अवतारों का विस्तृत वर्णन भागवत में मिलता है।[11] भगवान का लीला - वैचित्र्य जनता इतना दुरूह है की समान्य लोग मोहित हो जाते हैं। यही कारण भी है की वैष्णव धर्म का इतना व्यापक प्रसार हो सका।

विजयेन्द्र स्नातक ने अपने ग्रंथ 'राधावल्लभ संप्रदाय सिद्धान्त और साहित्य' में कहा है "वैष्णव धर्म के विकास और प्रसार में पुराणों का सर्वाधिक योगदान रहा है। वैष्णव संप्रदायों के परवर्तन में जिन सिद्धांतों को स्वीकार किया गया उनमें से अधिकांश का आधार पुराण - साहित्य ही है। उदाहरणार्थ चतुः संप्रदाय के अतिरिक्त श्री कृष्ण चैतन्य का 'गौड़ीय संप्रदाय' श्रीवल्लभ संप्रदाय या पुष्टिमार्ग और हितहरिवंश का 'राधा वल्लभ संप्रदाय' मुख्यतः श्रीमदभागवत और ब्रह्मवैवर्त पुराण में प्रतिपादित भक्ति पद्धति और राधाकृष्ण स्वरूप को लेकर आगे बढ़े है।[12]

कृष्ण की उपासना का साक्ष्य गुप्त युग में भी मिलता है साथ ही विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त प्राचीन कृष्ण की मूर्तियों से ज्ञात होता है की कृष्ण की उपासना अत्यंत प्राचीन काल से चलती आ रही है।[13] लोकमानस में कृष्ण अलग-अलग उपनामों में व्याप्त थे। मध्यकाल में उत्पन्न भक्ति आंदोलन की सगुण शाखा में कृष्णकथा का विस्तार देखा जा सकता है। विष्णु के अवतारों में लोक रक्षक तथा लोक रंजक दृष्टिकोण से राम और कृष्ण की भक्ति का सर्वाधिक विस्तार हुआ। कृष्ण विष्णु के पूर्ण कला के अवतार कहे जाते हैं।

वैष्णव भक्ति को प्रचारित प्रसारित करने वाले आचार्य शंकराचार्य के अद्वैत सिद्धान्त के विरुद्ध अपने दार्शनिक तथा व्यवहारिक विचार व्यक्त किया। उनकी विचारधारा को स्वीकार न कने वालों में रामानुजाचार्य, निंबकचार्य, माध्वाचार्य, विष्णुस्वामी एवं वल्लभाचार्य ने भक्ति के लिए नवीन मार्ग खोजा। भक्ति के क्षेत्र में इन आचार्यों की देन बहुमूल्य है क्योंकी विष्णु के अवतारी रूप राम और कृष्ण को इन्होने भक्ति का उपास्य देव बना दिया। मध्यकालीन भक्ति का जो रूप संस्कृत और भारतीय भाषाओं में विकसित हुआ उसका श्रेय इन्हीं आचार्यों को है। रामानुजाचार्य के बाद रमानन्द ने राम को अधिक व्यापक स्तर पर ग्रहण किया। रामभक्ति की यह परंपरा बाद में हिन्दी कवियों में तुलसीदास जैसे समर्थ कवि द्वारा अपने सर्वोच्च शिखर तक पहुंची। कृष्ण भक्ति के लिए निंबर्क, महत्व, विष्णुस्वामी तथा इनके बाद वल्लभचार्य, कृष्णचैतन्य, हितहरिवंश, हरिदास आदि भक्तों ने जो पर्यास कीए थे वे कृष्ण भक्ति को व्यापक आयाम ब्रजबूलीकरने वाले

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

सिद्ध हुए। वैष्णव चैतना के माध्यम से सभी साहित्य एक दूसरे के समीपी है। बंगाल पूर्वाञ्चल में चैतन्य चंडीदास ने वैष्णव मत का प्रचार किया और वह अंचल वृन्दावन से जुड़ गया। बंगाल की वैष्णव चैतना का व्यापक प्रभाव रहा और चैतन्य की प्रेरणा से षटगोस्वामी, सनातन, रघुनाथदास, रघुनाथ भट्ट, गोपाल भट्ट, जीवगोस्वामी ने ब्रजमंडल में कृष्णभक्ति को वैचारिक आधार दिया। असम में शंकरदेव का 'एकशरण धर्म' काव्य तथा नाटक के माध्यम से प्रसारित हुआ और जनसमान्य में प्रभावी बना। तमिल अलवार संत एवं वैष्णवाचार्य तेलगु में बेमना, संभेर पोतना गुजरात में 'नरसी मेहता, राजस्थान में मीरा आदि से इस व्यापक आंदोलन की सक्रियता का पता चलता है। अवतारवाद में कृष्ण सर्वोपरि देवता रहे और केंद्र में रखकर भक्ति काव्य विकसित हुआ। विष्णु के दो प्रमुख अवतार वैष्णव परंपरा को रचना में नई गति देते है। कृष्णकाव्य का ऐसा आकर्षण है की इसमें भी संप्रदाय जाति के है। रामायण - महाभारत के चरित नायक द्वापर के है, पर जहाँ तक भक्तिकाव्य का संबंध है, कृष्ण कुछ पहले आ गए और सोलह कला अवतार वाले अपने बहुरंगी व्यक्तित्व से लोकप्रिय भी हुई। राम त्रेता युग से जुड़कर भाषा रचना में थोड़ी देर से आए और चरित्र की मर्यादाओं ने उसकी सीमा तय कर दी। कृष्ण के चारों और एक समग्र लीला संसार है जिसमें राधा का प्रवेश नई भंगिमा का जन्मता है। प्रायः कहा जाता है की कृष्णकाव्य में लोकरंजक रूप अधिक है। जिसका एक कारण भागवत की प्रेरणा भी है।

बिहार में वैष्णव भक्ति आंदोलन: उद्भव एवं विकास एवं बिदापत की पृष्टभूमि

बिहार में वैष्णव धारा के विकास का इतिहास गुप्त वंश से जुड़ता है। गुप्त सम्राट वैष्णव धर्म के पालक थे। अतएव परमभागवत पदवी से विभूषित किए गए थे। उनकी स्वर्ण मुद्राओं पर विष्णु की भार्या लक्ष्मी तथा वाहन गरुड की आकृति अत्यंत सुंदर ढंग से खुदी है। पौराणिक साहित्य के प्रभाव से गुप्त युग में विष्णु के दस अवतारों की कल्पना समाज में आयी तथा कलाकारों ने उनकी प्रतिमाएँ तैयार की। सबसे विचित्र बात तो यह है कि बिहार वज्रयान शाखा का गढ़ होते हुए भी वैष्णव मत के प्रवाह में डूब गया था। पाल नरेशों का युग तंत्रयान का मुख्य काल माना जाता है, परंतु इस समय में भी वैष्णव मत का प्रवाह अक्षय बना रहा। परम सौगात पाल नरेश धर्मपाल ने भी वैष्णव मंदिर के लिए दान दिया था। इसी का प्रभाव है कि मंत्रमान की अंतिम शाखा सहजयान 'वैष्णव सहजिया' के नाम से प्रसिद्ध हुई, जिसकी परंपरा में हम चैतन्य महाप्रभु को पाते हैं।

"मध्यकाल में बिहार की चिंतनधारा पर वैष्णव धर्म का पूरा प्रभाव पड़ा। चंदेश्वर द्वारा संकलित कृत्यरत्नाकर से यह स्पष्ट होता है कि मिथिला में 13वीं तथा 14वीं सदियों में लोगों के उपास्य देवता थे- विष्णु, हरि तथा शिव। पौराणिक तथ्यों के उद्धरण से चंदरेश्वर ने इस बात की पुष्टि की है कि आषाढ़ महीने की एकादशी तिथि (जब भगवान विष्णु शेषनाग पर अनंत शयन करते हैं) तथा कार्तिक की एकादशी तिथि (जब विष्णु अनंत शयन से जागृत होते हैं) अर्थात शयन एकादशी तथा उत्थान एकादशी का पालन हिंदुओं का धर्म है। इसी ग्रंथ में जन्माष्टमी के दिन श्रीकृष्ण के जन्म दिवस के पालन की विधियों का विशद विवरण है। उन्होने कार्तिक महीने की लक्ष्मी पूजा या कोजागरी पूर्णमासी का उल्लेख नहीं किया है, परंतु विजया द्वादशी को भगवान वासुदेव की पूजा, त्रयोदशी को शोभायात्रा, चतुर्दशी को उपवास तथा पूर्णमासी को हरि पूजन एवं कीर्तन का निर्देश किया है। विद्यापति के पिता के चाचा ने, जो चंदरेश्वर के वंशधरों में एक थे, एक वैष्णव ग्रंथ की रचना की जिसका नाम गोविंद मनसोल्लास है। कामेश्वर वंश के यज्ञधर ने जयदेव की अमरकृति गीतगोविंदम की टीका लिखी थी।"[14]

16वीं सदी के आरंभ में गया वैष्णव धर्म का एक महान केंद्र था। जब महाप्रभु श्री चैतन्य पिंडदान

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X

करने के लिए गया आए। उस समय ईश्वरपुरी से उनकी भेंट हुई और उन्ही से चैतन्य को दीक्षा मिली। यदि गया उस युग के वैष्णव साधुओं का तीर्थस्थान न होता तो ईश्वरपुरी वहाँ न गए होते। मध्ययुग में भागलपुर जिले का मन्दार वैष्णव धर्म का एक प्रमुख केंद्र था। मधूसूदन के मंदिर का यश भारत के कोने-कोने में फैला हुआ था और दूर-दूर के प्रांतों से असंख्य तीर्थयात्री यहाँ आते थे।

श्री चैतन्य के प्रमुख साथियों में चार बिहार के थे। वृन्दावन दास ने अपने चैतन्य भागवत में लिखा है कि ओड़ीसा में श्री चैतन्य के अंतरंग साथी परमानंदपुरी का जन्म तिरहुत में हुआ था। जायानंद के कथानुसार परमानन्दपुरी ने गोविंद विजय नामक ग्रंथ लिखा था, परंतु इस ग्रंथ का अभी तक पता नहीं चल सका। तिरहुत के योग्य विद्वान रघुपति श्री चैतन्य से वाराणसी में मिले थे।

बिहार में वैष्णव धर्म के विकास के दृष्टिकोण से बिहार का मिथिला प्रदेश प्रमुख है। यह वही क्षेत्र है जहां विद्यापति ने गोरक्षविजय, कीर्तिलता, कीर्तिपताका, उमापति ने पारिजातहरण की रचना की। मिथिला प्रदेश में वैष्णव प्रभाव के सामाजिक एवं राजनीतिक कारण है।

"हिमालय की तराई और पुण्योतया भागीरथी के बीच स्थित इस छोटे से प्रदेश का आज यद्यपि राजनीतिक भू-भाग के दृष्टिकोण से कोई अस्तित्व नहीं दिखाई पड़ता किन्तु अपनी आंचलिक विशेषताओं के साथ आज भी यहाँ के निवासी एक स्वतंत्र सांस्कृतिक एवं सामाजिक परंपरा को अपने जीवन के बीच सँजोये दिखाई पड़ते हैं और 'मैथिल' इस नाम से जानते जाते हैं। इस तथ्य का मूल कारण अति प्राचीनकाल में प्रतिष्ठित मिथिला जनपद तथा उसकी दीर्घकालीन सांस्कृतिक परंपरा है।"[15]

कर्णाटवंशी राजा नान्यदेव के समय (1097-1225 ई.) मिथिला और मोरग मधेस में एक प्रकार का नाच प्रचलित था। नान्यदेव स्वयं भरत के नाट्यशास्त्र के टीकाकार (सरस्वती हृदयालंकार) और ग्रंथमहार्णव के रचयिता थे। उन्होने 108 राग-रागनियों का उल्लेख किया। मिथिला की संगीत परंपरा में नान्यदेव, हरीसिंहदेव, ज्योतिरीश्वर (वर्णरत्नाकर), जगधर (संगीत सर्वस्व), लोचन (राग तंगिनी), घनश्याम (श्री हस्तमुकतावली), जगज्योतिर्ममल्ल (संगीत चिंतमणि) आदि का योगदान उल्लेखनीय है। 'वर्णरत्नाकर' कर्णाटकालीन मिथिला समाज का सांस्कृतिक दर्पण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. निवेदिता, 'द व्रत्यास', पृष्ठ संख्या 25.
[2]. वायु पुराण, 51।18.
[3]. ब्रह्मांड पुराण, 21।22।18,१६.
[4]. Wilson, h.h, "hindu religious", page 232.
[5]. अथ यद विशितों भक्ति तब विष्णुर्भवती, विष्णुविशतेवार्त्यश्नोंतेवारीयस्कनिरुक्त यास्क निरुक्त 12।16.
[6]. शर्मा, रामनरेश, 'हिन्दी सगुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका, प्राथकरण', पृष्ठ 6.
[7]. Kane, 'volume of studies in ideology presented tokane', page 90.
[8]. श्रीमदभागवत महापुराण -2।10।4.
[9]. महाभारत,शान्तिपर्व, अध्याय 336.
[10]. शुल्क, रामचन्द्र,' सूरदास भक्ति का विकास, पृष्ठ 263.
[11]. उपाध्याय, बलदेव,' भागवत संप्रदाय', पृष्ठ 167.
[12]. स्नातक,विजयेन्द्र,' राधा वल्लभ संप्रदाय: सिद्धान्त और साहित्य', पृष्ठ 135.
[13]. जायसवाल,सुवीरा,' वैष्णव धर्म का उद्भव और विकास', पृष्ठ 70.
[14]. प्रसाद, ओमप्रकाश, 'बिहार एक एतिहासिक अध्ययन', पृष्ठ संख्या 489.
[15]. झा, डॉ. प्रतापनारायण, 'मैथली नाटक का उद्भव और विकास', पृष्ठ संख्या 14.

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-401X